

पुस्तक संख्या
पुस्तक

06/07/2017

01/02/17

पञ्जाब की राजस्व लोक अग्रतन्त्र के रूप में
 केन्द्रिया या प्रकृत इन्दी वादी एवं
 प्रतिवादी संख्या 1 उपस्थित है जो पक्षों
 का मुल उपाय। पञ्जाब की पर उपलब्ध
 राजस्व अभिलेख का व्यवहारात सिद्ध
 उपाय वादी की द्वारे से ऐसा प्रारंभ
 दस्तावेज यथा परम्परागती पर्याप्त मोला,
 सीमा जानकारी पर्याप्त मोला, जोडोग्राफ
 इत्यादि प्रकृत नहीं किए गए हैं
 जिससे यह सात जा सकता है
 कि प्रतिवादी उपाय वादी की प्रति पर
 गणपण्य कठपना किया गया है वादी
 द्वारा अपने काम में भी ऐसा कथन
 सुस्पष्ट जबाब नहीं दिया गया कि
 प्रतिवादी उपाय वादी की प्रति पर इतिक्रम
 किया है वादकाल साहित्य नहीं के
 से लबूत के दस्तावेज में वाद वादि द्वायीज
 किया जाता है पञ्जाब की फिलहाल मुल
 देखने गावर से काम है।

[Handwritten signature]

06.7.17

